मनुष्यता से आप क्या समझते है ?

आप पशु और मानव के बीच के अंतर को कैसे बता सकते हो ?

मनुष्यता से अभिप्राय है -

निस्वार्थ भाव से जीवन जीना और परोपकार करना ही सच्ची 'मनुष्यता' है |

मनुष्यता का अर्थ श्रेष्ठ गुणों को धारण करना |

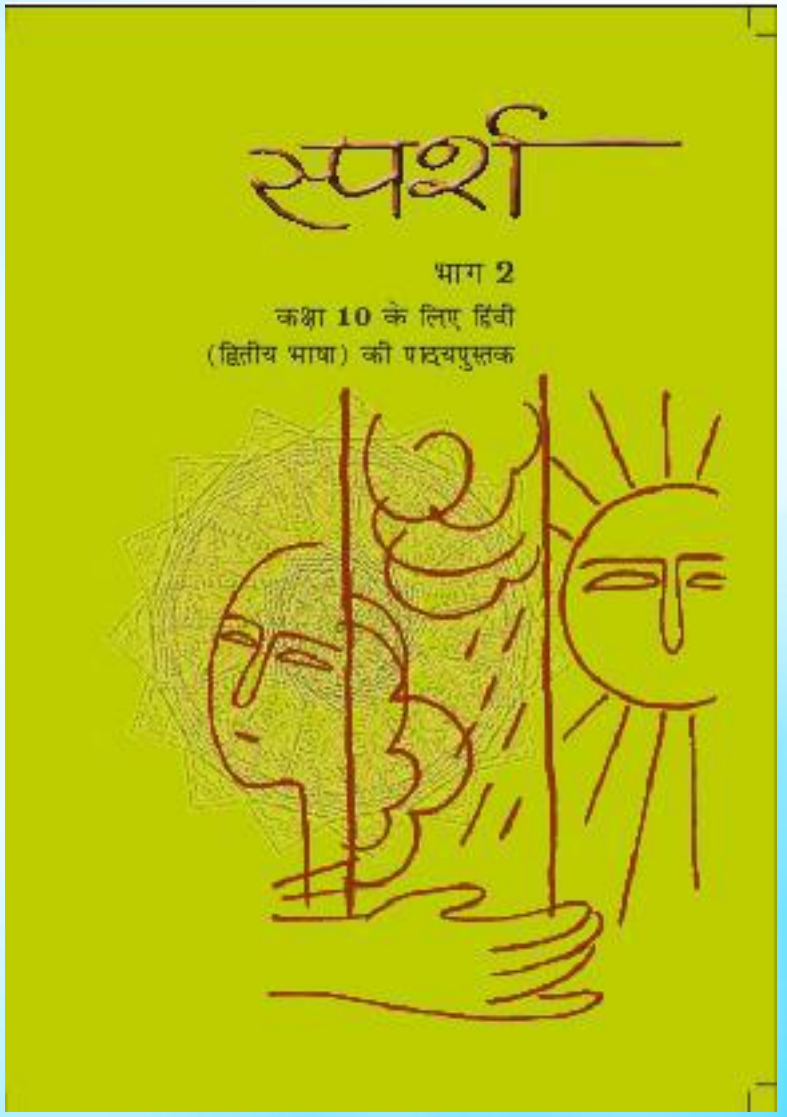

कक्षा-10 हिंदी
भाग-2
स्पर्श पद्य खंड - पाठ 4

कविता- मनुष्यता

-मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त जी का जीवन परिचय-:

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन 1886 में झाँसी के करीब चिरगाँव में हुआ। इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बांग्ला, मराठी और अंग्रेजी आदि विषयों की शिक्षा ली।
- मैथिलीशरण गुप्त जी एक रामभक्त कवि थे, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।
- मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी कविताओं द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने का अथक प्रयास किया। हिन्दी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, धार्मिक भावना और मानवीय उत्थान का भाव दिखाई देता है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम-भक्त थे। इसी कारण, उनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत हैं।

- प्रमुख कृतियां -साकेत, यशोधरा, जयद्रथ-वध आदि |

- 'भारत-भारती' के लिए मैथिलीशरण गुप्त जी को महात्मा गाँधी ने 'राष्ट्रकवि' की पदवी दी और सन 1954 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

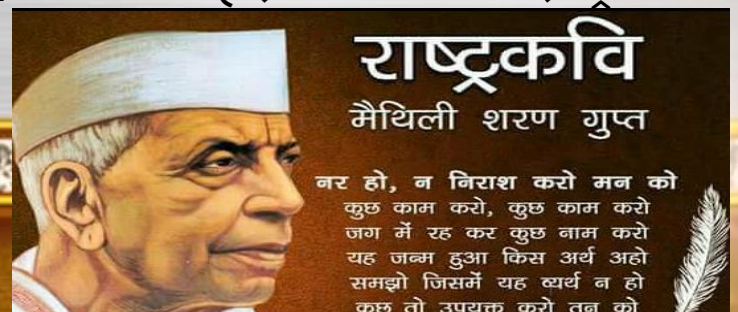

मनुष्यता

कविता के बारे मे

कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने उसी व्यक्ति को मनुष्य माना है, जो केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित के लिए भी जीते-मरते हैं। ऐसे मनुष्य को मृत्यु के बाद भी उसके अच्छे कर्मों के लिए युगों-युगों तक याद किया जाता है, इस प्रकार, परोपकारी मनुष्य मर कर भी दुनिया में अमर हो जाता है।

मनुष्यता

काव्यांश-1

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु—प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

विचार - सोच
मर्त्य - मरणशील /नश्वर
मृत्यु - मौत
सुमृत्यु - अच्छी मौत/गौरवशाली मृत्यु
वृथा - बेकार
जिया - जीना
पशु - जानवर
प्रवृत्ति - आदत/आचरण
चरे - चरना

काव्यांश-1 अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

- हमें किससे नहीं डरना चाहिए? क्यों?
- मनुष्य किससे अधिक डरता है?
- मनुष्य को कैसी मृत्यु अधिक शोभा देती है?
- किस प्रकार की मृत्यु को सुमृत्यु कहा जा सकता है?
- दूसरों के लिए जीनेवालों की मृत्यु किस तरह होती है?
- किसे वृथा जीना पड़ता है?
- किसे वृथा मरना पड़ता है?
- पशु-प्रवृत्ति से क्या तात्पर्य है?

मनुष्यता

काव्यांश-2

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

1. उदार - विशाल हृदय वाला
2. कथा-कहानी
3. सरस्वती - किताबें
4. बखानती -वर्णन करना
5. धरा - पृथ्वी
6. कृतार्थ - आभारी
7. भाव - भावना
8. सदा - हमेशा
9. सजीव - जीवंत
10. कीर्ति - यश
11. कूजती -ध्वनित होना
12. समस्त - पूरी
13. सृष्टि - दुनिया
14. पूजती - पूजा जाना
15. अखंड - बिना टूटा हुआ
16. आत्म भाव - अपनेपन की भावना
17. असीम - जिसकी सीमा न हो

काव्यांश-2 अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

प्रश्न 1) कवि ने दधीचि, कर्ण, रंतिदेव, शिबि आदि दानी व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?

प्रश्न 2) रंतिदेव कौन थे? उन्होंने भूखे व्यक्ति से कैसा व्यवहार किया?

मनुष्यता

काव्यांश-3

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

क्षुधार्त - भूख से व्याकुल
रंतिदेव - एक परम दानी राजा
करस्थ - हाथ का
दधीचि - एक ऋषि
परार्थ - दूसरों के हित में
अस्थिजाल -हड्डियों का समूह
उशीनर - गांधार देश का राजा
क्षितीश - राजा
स्वमांस - खुद का मांस
सहर्ष - खुशी से
अनित्य-नाशवान
शरीर चरम- शरीर की चमड़ी
अनादि- जिसका आदि न हो/ अमर

मनुष्यता

काव्यांश-4

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

सहानुभूति -दुखी के साथ मिलकर उसके दुःख को महसूस करना

महाविभूति - बड़ी पूँजी

वशीकृता -वश में की हुई

सदैव- हमेशा

स्वयं -खुद

मही - पृथ्वी

विरुद्धवाद - विरोध करने की प्रवृत्ति

बुद्ध - गौतम बुद्ध

विनीत - **विनम्र**

लोकवर्ग - जन समूह

मनुष्यता

काव्यांश-5

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ है,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मदांध -घमंड में अंधा
तुच्छ -मामूली
वित्त - धन
सनाथ - नाथ के साथ
गर्व - अभिमान
अनाथ - नाथ के बिना
त्रिलोकनाथ - तीनों लोकों के नाथ
दीनबंधु - गरीबों के मसी
विशाल - बड़ा
अतीव - अत्यधिक
भाग्यहीन - जिसका भाग्य साथ न दे
अधीर - जिसमें धीरज न हो

मनुष्यता

काव्यांश-6

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं **खड़े,**
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य अंक में आपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

अनंत - जिसका अंत न हो
देव - भगवान
समक्ष - सामने
स्वबाहु - अपने हाथ
परस्परावलंब - आपस में मिल-जुल कर
अमर्त्य अंक – देवता की गोद
अपंक – कलंक रहित/कीचड़
सरे – पूरा हो/समाप्त होना

मनुष्यता

काव्यांश-7

मनुष्य मात्र बंधु हा यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मात्र - केवल
बंधु -मित्र
विवेक – समझदारी
पुराणपुरुष - परमात्मा
स्वयंभू -जो खुद पैदा हुआ हो
पिता - परमात्मा
प्रसिद्ध - विख्यात
फलानुसार - फल के अनुसार
कर्म - कर्तव्य
अवश्य - ज़रूर
बाह्य - बाहरी
भेद - अंतर
अंतरैक्य - आत्मा की एकता
प्रमाणभूत - साक्षी
अनर्थ - बर्बाद
व्यथा - परेशानी
हरे - दूर करे

मनुष्यता

काव्यांश- 8

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें , उसे ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े ने भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मार्ग - राह
विपत्ति -समस्या
विघ्न - बाधा
हेलमेल - मेलजोल
भिन्नता - अंतर
अतर्क -तर्क से परे
पंथ - समूह
सतर्क -तर्क के साथ
समर्थ - योग्य
तारता - उपकार करना
तरे - मरना

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

जीवन की सुख-सुविधाओं में मदांध होकर जीनेवालों को कवि क्या उपदेश देना चाहते हैं?

- धन-संपत्ति के प्रति कवि की राय क्या है?
- सनाथ जीवन के लिए क्या न होना चाहिए?
- यहाँ दीनबन्धु कौन है?
- अभीष्ट मार्ग में किस तरह चलना है?
- "घटे न हेल-मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी"- यहाँ कवि का तात्पर्य क्या है?
- कवि की राय में क्या नहीं घटना चाहिए?
- क्या नहीं बढ़ना चाहिए?
- हम किस राह के पथिक हैं?
- जीवन का समर्थ भाव किसमें है?

मेरी समझ

कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त' जी ने मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास किया है।

मुख्य बिंदु

- पहले काव्यांश में कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें।असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले।

- दूसरे काव्यांश में कवि कहता है कि हमें उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे।

- तीसरे काव्यांश में कवि ने पौराणिक पात्रों -दधीचि,कर्ण,रंतिदेव,शिबी आदि दानी व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए त्याग और बलिदान के महत्त्व को बताया है कि उनके द्वारा किए गए त्याग भाव और बलिदान के लिए आज भी याद किया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले।

- चौथे काव्यांश में कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है।

मुख्य बिंदु

- पाँचवें काव्यांश में कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।

- छठे काव्यांश में कवि ने कहा है कि हमें दयालु बनना चाहिए क्योंकि दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए।

- सातवें काव्यांश में कवि कहता है कि मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग-अलग हो परंतु हमारे वेद साक्षी हैं कि सभी की आत्मा एक है,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आए।

- अंतिम काव्यांश में कवि कहना चाहता है कि विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है।

‘मनुष्यता’ कविता का संदेश-

राष्ट्रकवि ने मनुष्य को परोपकारी बनने की प्रेरणा दी है | परोपकार की भावना से ही मनुष्य में सद्गुणों का विकास होता है |

मनुष्यता कविता में कवि ने दधीचि,कर्ण,रंतिदेव,शिबी आदि दानी व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए त्याग और बलिदान का महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

मानव जीवन में मानवता कम हो रही है। अतः परोपकार की शिक्षा देकर देशप्रेम तथा देश के प्रति कर्तव्य का बोध कराना।

'मनुष्यता' कविता द्वारा **कवि** त्याग,बलिदान, मानवीय एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का **संदेश देना चाहता** है। **कवि चाहता** है कि समस्त **मनुष्य** एक-दूसरे के साथ अपनत्व की अनुभूति करें। वह दीन-दुखियों, जरुरतमंदों के लिए सहानुभूति का भाव रखते हुए त्याग करने के लिए सहर्ष तैयार रहें।

नि:स्वार्थ भाव से जीवन जीना और परोपकार करना ही सच्ची ‘मनुष्यता’ है |

मनुष्यता क्या है ?

प्रश्न-अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?
2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
3. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?
4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?
5. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?
7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।
8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
   वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
   विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
   विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
   सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
   अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
   दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
   विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
   घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
   अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

योग्यता विस्तार

1. अपने अध्यापक की सहायता से रंतिदेव, दधीचि, कर्ण आदि पौराणिक पात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. 'परोपकार' विषय पर आधारित दो कविताओं और दो दोहों का संकलन कीजिए। उन्हें कक्षा में सुनाइए।

श्रवण,चर्चा.....कविता वाचन

- संकलन व श्रवण : दधीचि, कर्ण, रंतिदेव, शिबि आदि दानी व्यक्तियों की कहानियों का संकलन करें।
- **चर्चा-कविता में दिए पौराणिक पात्रों के महत्त्व पर चर्चा|**
- वाचन- कविता का भावपूर्ण वाचन करें।
- समझ- मानव जीवन अमूल्य है। भिन्नताओं को भूलकर एकता में रहने से सबकी भलाई होती है। अपने सामर्थ्य से दूसरे प्राणियों के सुखी होने के लिए तन, मन, धन से प्रयास करना चाहिए |